Sai ve bhajan by satinder sartaj in Hindi

कोई अली आखे कोई वली आखे,

कोई कहे दाता सचे

मालिका नु ।

मेनू समज न आवे की नाम

देवा, एस गोल चकी दिया

चालका नु ॥

रूह दा असल मालिक ओही

मानिये जी, जिदा नाम लईए

ता सरुर होवे ।

अखा खुलिया नू महबूब

दिस्से, अखा बंद होवण ता

हुजुर होवे ॥

कोई सौन वेले कोई नहान

वेले, कोई गौण वेले तैनू

याद करदा ।

एक नजर तू मेहर दी मार

साईं, सरताज वी खड़ा

फरयाद करदा ॥

साईं वे साढी फरियाद

तेरे ताहि, साईं वे

बह्हो फ़ढ़ बेड़ा बन्ने

लाई ।

साईं वे मेरेआं गुनाहा

नु लुकाई, साईं वे हाजरा

हजूर वे तू आई ॥

साईं वे साढी फरियाद

तेरे ताहि, साईं वे

बह्हो फ़ढ़ बेड़ा बन्ने

लाई ।

साईं वे मेरेआं गुनाहा

नु लुकाई, साईं वे हाजरा

हजूर वे तू आई ॥

साईं वे फेरा मस्कीना

वाल पाई, साईं वे बोल काक

सारा दे पुगई ।

साईं वे हक विच फैसले

सुनाई, साईं वे हौली -

हौली खामिया घटाई ।

साईं वे मेनू मेरे

अन्द्रो मुकाई, साईं जे

डीगिये ता फर के उठाई ।

साईं वे देखि ना भरोसे

आजमाई, साईं वे औखे -सौखे

रहा चो काढायीं ।

ओ साईं, कला नु वी होर

चमकाई, वे सूरा नु बिठा

दे थो - थाई ।

साईं वे ताल विच तुरना

सिखाई, साईं वे साज रूस

गए ता मनाई ।

साईं वे ऐहना नाल आवाज़

वे रालायी, साईं वे अखरा

दा मेल तू कराइ ।

साईं वे कन्नी किसे गीत

दी फडाई, साईं वे शब्दा

दा साथ वी निभाई ।

साईं वे नगमे नू फड़ के

जगाई, साईं वे शायरी च

असर वखायीं ।

साईं वे ज़ज्बे दी वाले

नु वडाई, साईं वे गुट-गुट

सब नु पेआयीं ।

साईं वे इश्कुए दा नशा

वी चाडायीं, साईं वे सैर

तू ख्यालां नू कराई ।

साईं वे तारेआं दे देश

ली के जावीं, साईं वे

फुफिया दे वांगरा नचाई

।

साईं वे असी सज बैठे

चाईं-चाईं, साईं वे थोड़ी

बौती अदा वी सिखाई ।

साईं वे मेरे नाल- नाल तू

वे गायीं ।

साईं वे साईं लाज सरताज

दी बचाई, साईं वे भुलेये

नू ऊँगली फराई ।

साईं वे अग्गे हो के राह

रोषनयी, साईं वे नेहरा

विच पल्ले ना छुडायीं ।

साईं वे जिंदगी दे भोज

नु चुकाई, साईं वे

फिखारा नु हवा च उढाई ।

साईं वे सारे लगे दाग वी

धोअई, साईं वे सिले-सिले

नैना नु सुखाई ।

साईं वे दिला दे गुलाब

महकाई, साईं वे बस पट्टी

प्यार दी पढ़ाईं ।

साईं वे पाक साफ़ रहा नु

मलाई, साईं वे बच्चेआ दे

वंगु समझाईं ।

साईं वे माड़े कामो घूर

के हटाई, साईं वे खोटेया

नु खरे च मिलाई ।

साईं वे लोहे नाल पारस

कसाई, साईं वे मेहेंता

दे मूल वे पवाई ।

ओ साईं वे मारेया दी

मंदी न विखाई, साईं वे

देखि हून देर न लगाई ।

साईं वे दारां ते खरे हा

खैर पाई, साईं वे महरा

वाले मीह वि वरसाई ।

साईं वे अकला दे घड़े नु

पराई, साईं वे घुम्बद

गरूर दे गिराई ।

साईं वे आग वंगु हौसले

पखाई, साईं वे अम्बरा

तोह सोच मंगवाई ।

साईं वे अपे वाज़ मार के
बुलाई, साईं वे हुन सानु
कोल वे बिठाई ।
साईं वे अपने ही रंग च
रंगाई, साईं वे मैं हर
वेहले करां साईं साईं ।

साईं वे तोते वांगु बोल
वी रटाई, साईं वे आत्मा
दा दीवा वी जगाई ।
साईं वे अनहद नाद तू
वजाई, साईं वे रूहानी
कोई तार छेड़ जाईं ।
साईं वे सच्ची सरताज वी
बनाई ।।